रंगों का डब्बा

लेखन: मैक्सीन ट्राटिए
चित्र: स्टैला ईस्ट
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

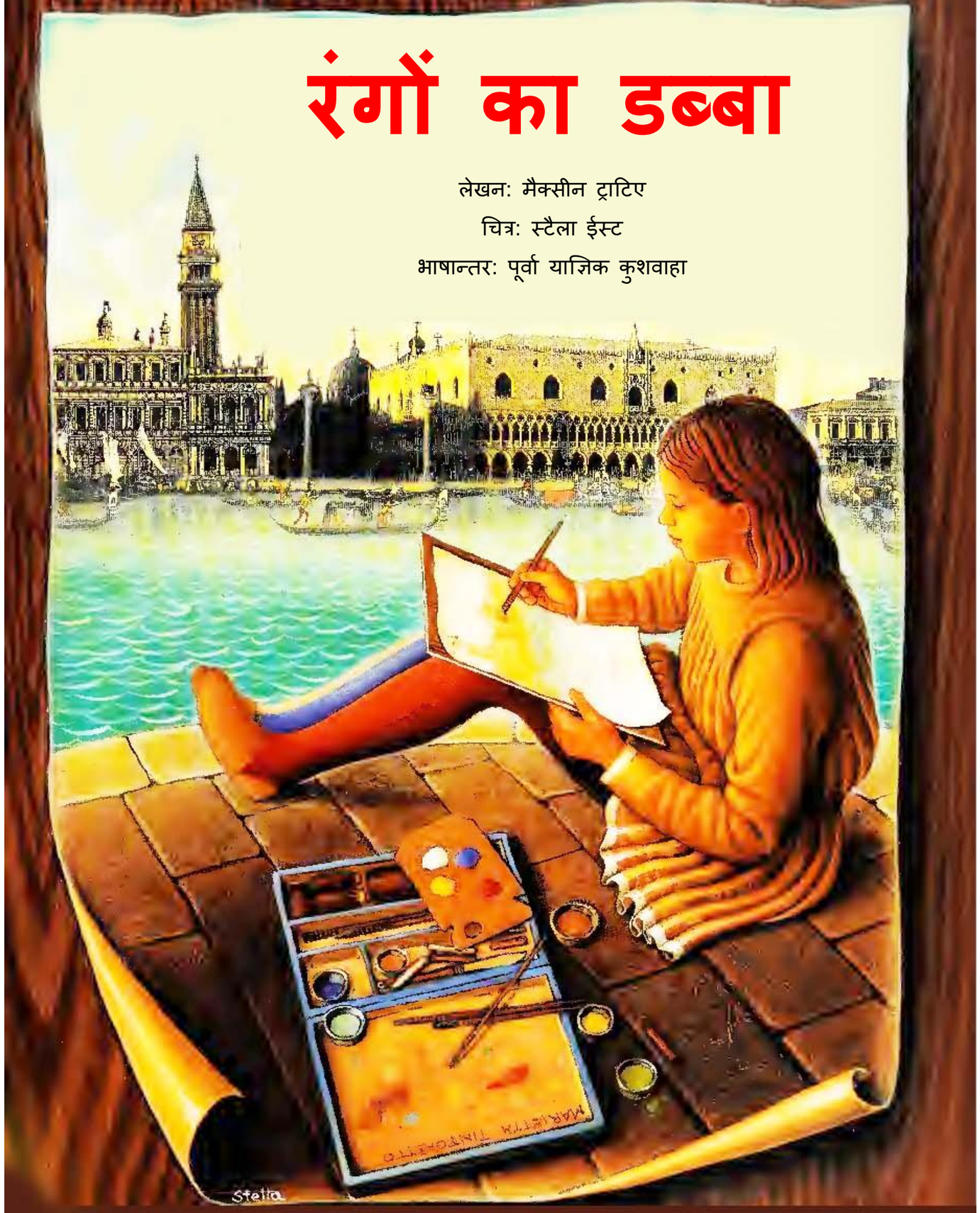

हालांकि मारिएत्ता के सपने वेनिस से बहुत दूर की यात्राएं करने के असंभव सपने हुआ करते थे, पिएरो के सपने अपने बिछड़े घर-परिवार से मिलने के थे। दोनों के जीवन भी बिलकुल अलग-अलग हैं। मारिएत्ता मशहूर चित्रकार तिनतोरेत्तो की लाड़ली बेटी है, और पिएरो समुद्री जहाज़ के कप्तान का अदना-सा गुलाम। इसके बावजूद दोनों के बीच एक अभिन्न दोस्ती पनपती है, क्योंकि दोनों को ही चित्र आँकने से प्यार है।

मारिएत्ता और पिएरो आज़ादी के कुछ सप्ताह साथ गुज़ारते हैं, जिस दौरान वे वेनिस के गली-कूंचों और नहरों की छानबीन करते हैं।

रेनेसां (पुनर्जागरण) काल की पृष्ठभूमि में स्थित रंगों का डब्बा अपने युग की कामनाओं और अपूर्ण वादों की कहानी है जिसे एक विलक्षण कथाशिल्पी सुना रही हैं।

रंगों का डब्बा

लेखन: मैक्सीन ट्राटिए

चित्र: स्टैला ईस्ट

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मेरे पिता के लिए
- एम.टी.

सेवरीन को
- एस.ई.

बहुत समय पहले वेनिस में एक लड़की रहा करती थी, जिसका नाम मारिएत्ता था। वह मशहूर चित्रकार तिनतोरेत्तो की बेटी थी।

उसके पिता उससे बेइन्तिहा प्यार करते थे। सो उसे पतलून और जैकेट पहना, एक लड़के के रूप में हर जगह अपने साथ ले जाते थे। पर यह बात पिता और बेटी के बीच की गुप्त बात थी। यह छद्म-भेष तिनतोरेत्तो को हमेशा अपनी दुलारी बेटी को साथ रखने का मौका देता था और मारिएत्ता को वेनिस के कलाकारों की कार्यशालाओं और शहर की कलादीर्घाओं की खोजबीन करने का। दरअसल उन दिनों लड़कियों को चित्रकारी सीखने की आज़ादी ही नहीं थी।

मारिएत्ता कभी भी अपने उस रंगों के डब्बे के बिना बाहर नहीं जाती थी, जो उसके पिता ने उसे भेंट किया था। डब्बे का रंग गर्मियों के आसमान सरीखा नीला था। वह इसमें आँकने के लिए कुछ कागज़, ब्रुश, रंगीन खड़िया और रंगों की शीशियाँ रखती थी। यह उसका बेशकीमती ख़ज़ाना था। मारिएत्ता जानती थी कि किसी दिन वह भी अपने पिता की तरह ही एक चित्रकार बनेगी।

"एक चित्रकार की ओर से दूसरे को एक तोहफ़ा मेरी लाड़ली," रंगों का डब्बा देते समय पिता ने कहा था। "एक चित्रकार का काम दिल को प्रकाश से भर देता है। इसका अच्छा उपयोग करना मारिएत्ता और यह तुम्हारे दिल हमेशा खुशी से सराबोर करता रहेगा।"

एक गर्मियों के दौरान समुद्री जहाज़ का एक अमीर कप्तान तिनतोरेत्तो की कार्यशाला में आया। उसे अपना एक चित्र बनवाना था। जब वह चित्र बनवाने के लिए बैठा वह बड़ा ही शानदार और रहस्यमय नज़र आ रहा था। उसके कानों में सोने के कुण्डल चमचमा रहे थे। कुछ देर मारिएत्ता ने पिता को काम करते देखा, तक झरोखे से नीचे झांकने लगी।

नीचे एक लड़का उंकडूं बैठा था। उसने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं और आँखे मिलाईं। उसकी मुस्कान में सूरज की गरमाहट समाई हुई थी।

"मुझे उसका चेहरा आँकना ही होगा!" मारिएत्ता बरबस चीख पड़ी। उसके पिता उसकी बात सुन हंसे और चित्र बनाने के लिए पलटने के पहले सिर हिला उसे अनुमति दे दी।

कप्तान ने भी नीचे झांक कर देखा। उसे अपने गुलाम, जो उसका जहाज़ी बैरा था, के सिवा कुछ न दिखा। "जहाज़ के बिना जहाज़ी बैरे का क्या काम?" उसने कहा। "जब तक मैं यहाँ हूँ, तुम उसे काम में ले सकते हो।"

मारिएत्ता रंगों का डब्बा उठाए तेज़ी से सीढ़ियों से नीचे उतरी। वह लड़का घुटनों के बल झुका कोयले के टुकड़े से पत्थर पर कुछ आँक रहा था।

"एक सिक्के के बदले मैं आपका चेहरा आँक सकता हूँ जनबा," उसने मिन्नत करते कहा।

"पर मैं तुम्हारा चेहरा आकँना पसन्द करूंगा," मारिएत्ता ने पलट कर जवाब दिया। "और मैं कोई जनबा-वनाब नहीं हूँ।"

लड़के की आँखें अचरज से फैलीं, तब वह हंस पड़ा। "कमाल का भेस धरा है आपने।"

"मेरी ज़िन्दगी की यही सच्चाई है," मारिएत्ता ने उसांस भरते कहा। "अगर मुझे चित्रकारी के बारे में सीखना है तो मैं वेनिस में लम्बी पोशाकें पहने घूम ही नहीं सकती। इसलिए इन कपड़ों से मैं उतनी ही बंधी हूँ, जितने तुम अपने मालिक से।"

उस लड़के का नाम पिएरो था, जहाज़ का कप्तान उसका मालिक था। पिएरो ने मारिएत्ता को बताया कि उसे इसलिए बेचा गया था ताकि उसके छोटे भाई-बहनों को खाने को रोटी मिल सके। जब पिएरो को घर से ले जाया जा रहा था वे सब एक कतार में खड़े आँसू बहाते चुपचाप खड़े थे। पर उसके दादाजी - उसके दादाजी उस दिन दहाड़ें मार कर रोए थे।

मारिएत्ता और पिएरो में इतना अंतर था जितना चाँद और सूरज में होता है। इसके बावजूद उनमें समानता थी। चित्रकारी के प्रति उनके प्यार ने उन्हें समान बना दिया था। आगे आने वाले दिनों में वे अभिन्न मित्र बन गए।

जिस दिन आसमान साफ़ होता दोनों शहर में घूमते ताकि आँकने को कुछ नया तलाश लें। या फिर मारिएत्ता पिएरो को पत्थर पर अपने दादाजी का चेहरा आँकते देखती।

कभी वे मारिएत्ता की छोटी नाव ले नहरों के ओर-छोर का चक्कर लगाते। वे शानदार गोन्डूला को पास से गज़रते देखते, जो ऐसे लगते मानों खूबसूरत काले हंस हों। दिन भर धूप में गुज़ारने के बाद अपनी झुलसी चमड़ी के साथ दोनों थके-हारे नाव को तिनतोरेत्तो की कार्यशाला के पीछे बांध देते। बरसाती दोपहर को वे मौसम की अनदेखी कर नहर किनारे साथ-साथ बैठते। पानी में पैर डुबा बूंदों को पानी में हज़ारों गोले बनाते निहारते।

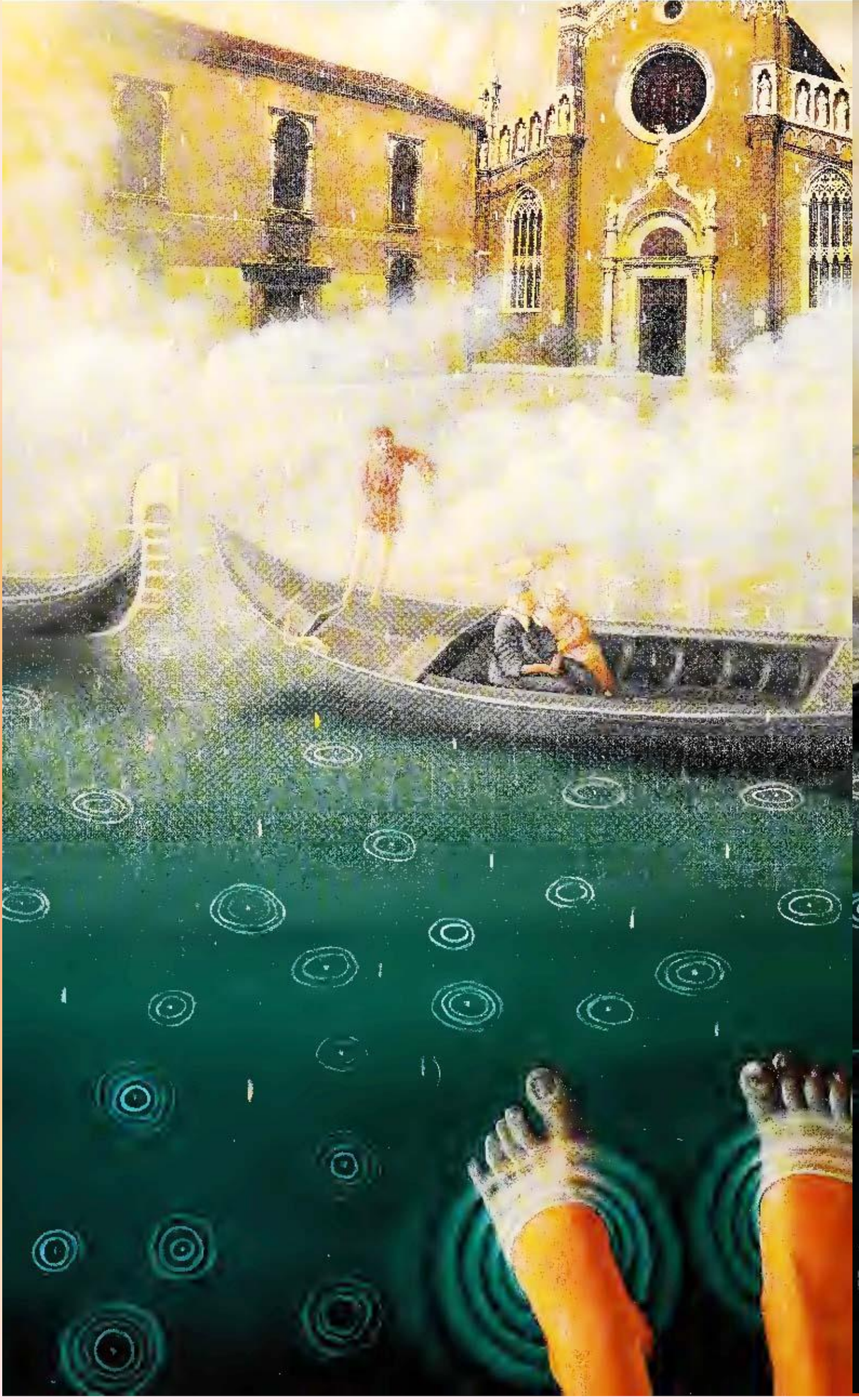

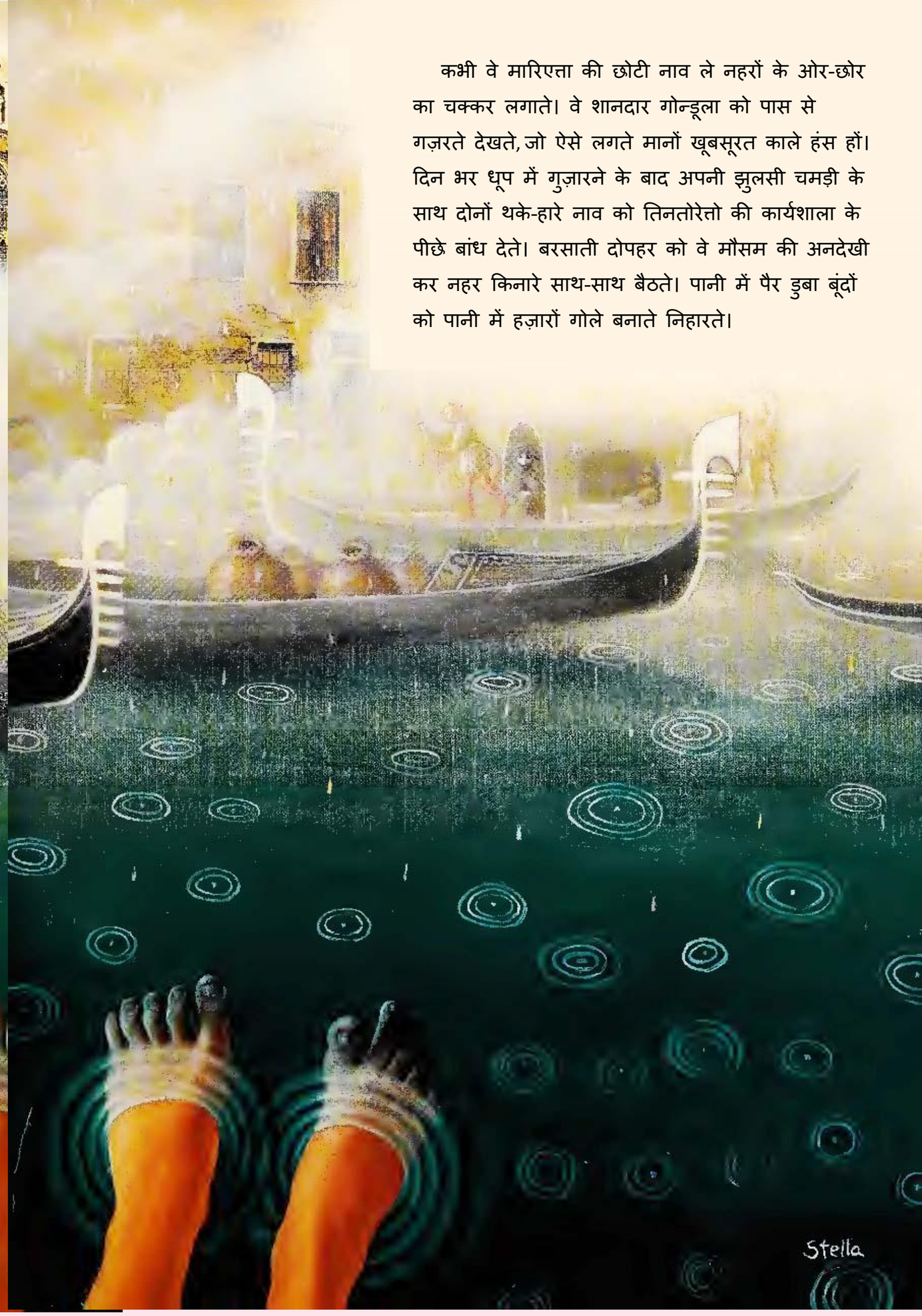

"तुम्हारी तरह समुद्री जहाज़ में सफ़र करना कितना शानदार होता होगा," मारिएत्ता ने गहरी सांस छोड़ते कहा। "ऐसे ही करते रहो तो कुछ ही समय में तुम पूरी दुनिया ही देख लोगे।" उसका दिल वेनिस की शान्त खाड़ी के परे पहाडों, मैदानों और समुद्रों के ख़याल से ही दुखी हो जाता था। हालांकि फिलहाल उसे एक किस्म की आज़ादी मिली हुई थी, उसे उस रेशमी फंदे का अहसास भी था जो उसके गिर्द धीरे-धीरे जकड़ रहा था। "मुझे तो यह डर है कि मैं कभी वेनिस से बाहर निकल ही नहीं पाऊँगी।"

"काश मैं तुम्हारी तरह यहाँ रह कर हमेशा चित्र बना सकता," पिएरो ने जवाब में कहा। "तुम किसी दिन ज़रूर एक उम्दा चित्रकार बनोगी। यह कितना बढ़िया होगा।" यह कहते वक़्त पिएरो के मन में जहाज़ का वह छोटा-सा केबिन, उसका एकाकी बिछौना और नीचे समुद्र की अनन्त हलचल की याद बसी थी। "पर मुझे तो जल्द ही वापिस लौटना होगा," उसने उदासी से भर कहा।

मारिएत्ता ने उसके हाथ पर अपना हाथ रखा। "अभी तो समय है। हमारे सामने पूरी गर्मियाँ बाकी हैं।"

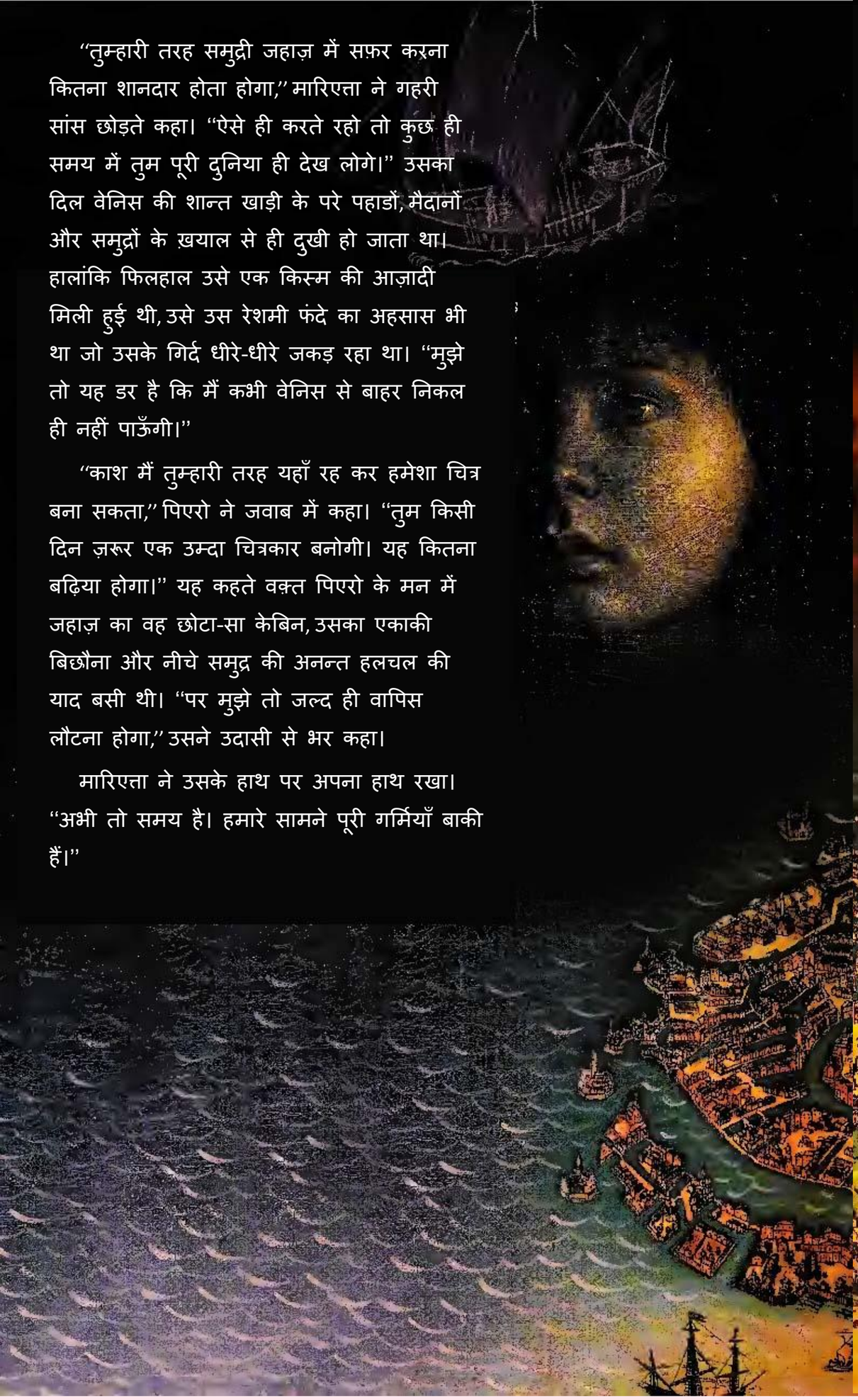

पर मारिएत्ता ग़लत थी। उसके पिता का काम तेज़ी से बढ़ा और जहाज़ के कप्तान का चित्र जल्द ही बन कर पूरा हो गया। कप्तान को अगले ही दिन निकल जाना था। ज़ाहिर है पिएरो को भी साथ निकलना था।

अपनी आख़िरी रात वे तिनतोरेत्तो की कार्यशाला में गए। पिएरो ने कमरे का चक्कर लगाया। जहाँ मारिएत्ता काम करती थी वहाँ बड़ी सावधानी से रंगीन खड़िया और रंगों की शीशियों को छुआ। तब एक ब्रश उठाया, पर जल्दी ही साँस छोड़ते हुए उसे नीचे रख दिया।

मारिएत्ता उससे पूछना चाहती थी कि क्या वह उसे काम में ले आज़माना चाहता है। पर पिएरो से उसने कुछ नहीं कहा, उसे लगा कि ऐसा करना बेरहमी होगी। क्योंकि हालांकि पिएरो की आत्मा एक चित्रकार की थी, था तो वह एक ग़ुलाम ! मारिएत्ता की दुनिया के दरवाज़े उसके लिए भला कब खुलने वाले थे।

"मैं अब कभी भी समुद्र के सफ़र पर नहीं जाना चाहता," पिएरो ने दुखी मन से कहा।

बिना कुछ कहे मारिएत्ता ने रंगों का डब्बा उठाया और पिएरो को कार्यशाला से बाहर ले गई। गहराते अंधेरे में आँगन पार कर वह उसे एक मेहराब की ओर ले गई। "यहाँ तुम्हें कोई नहीं तलाशेगा," उसने दृढ़ता से कहा। "जब कप्तान अपने जहाज़ को ले निकल जाए, तुम मेरी नाव ले अकेले निकल पड़ना। इस तरह तुम अपने दादाजी के पास लौट सकोगे।"

मेहराब के नीचे के धुंधलके में मारिएत्ता रुकी। उसने अपने रंगों के डब्बे को देखा, उसके ढ़क्कन पर हाथ फिराया। गुलामी कई तरह की होती है, उसने सोचा। मैं एक चीज़ से बंधी हूँ और पिएरो दूसरी से। अपने पिता की बात सोचते, उसके लिए पिता के प्यार की बात सोचते, उसने डब्बे को पिएरो की ओर बढ़ाया। "एक चित्रकार से दूसरे को," वह फुसफुसाई।

"पर मेरे पास तुम्हें देने को कुछ भी नहीं है," पिएरो ने बेबसी से कहा।

"मेरे लिए यह जानना ही काफ़ी होगा कि तुम आज़ाद हो।" मारिएत्ता ने उसे फिर से देखा। लौटने से पहले दोनों एक-दूसरे को देख मुस्कुराए। तब वह धीरे से पिएरो की आँखों से ओझल हो गई।

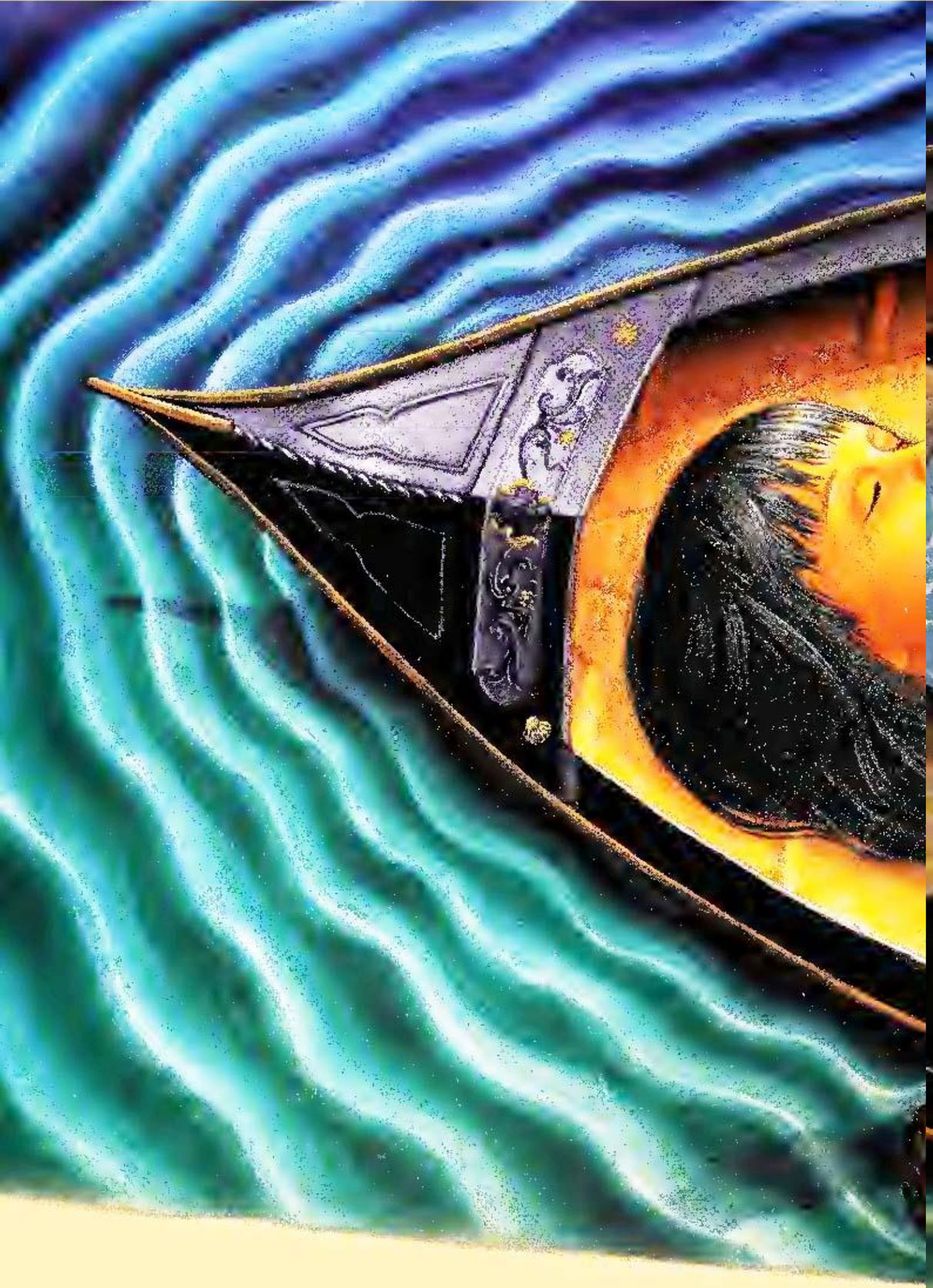

पिएरो ने रंगों के डब्बे को खोलकर देखा। अन्दर रखी उम्दा खड़िया और कोयले के टुकड़ों को देखा। वह अगले कई घंटों तक सोया नहीं। आख़िरकार जब वह मारिएत्ता की नाव पर सोने को चढ़ा वह बेहद थका हुआ था, पर खुश भी था। जिस तरह नन्ही चिड़िया आपने घोंसले में सोती है, लहरों ने नाव को हिला-झुला कर उसे भी सुला दिया।

अगली सुबह पिएरो को ढेरों आवाज़ें लगाई गईं। खूब तलाशा गया। पर पिएरो किसीको नहीं मिला। थक-हार कर कप्तान अपना तैयार चित्र लेकर जहाज़ से निकल गया। मारिएत्ता को मालूम था कि पिएरो अब महफूज़ है।

उस दिन देर दोपहर को मारिएत्ता उस जगह गई जहाँ उसकी नाव हमेशा बंधी रहती थी। वह जानती थी कि नाव अब वहाँ नहीं होगी। यह जानने के लिए उसे देखने जाने की दरकार न थी। पर वह फिर भी मेहराब के नीचे से निकल नहर की ओर बढ़ी।

पर कुछ ही कदम बाद वह ठिठक कर रुकी, उसकी आँखें अचरज से फैल गईं। वहाँ की दीवारें चित्रों से अटी पड़ीं थीं। पिएरो ने उसके लिए कोहरे से भरे पहाड़ और घनी हरी वादियों के चित्र आँके थे। वहाँ उनींदे खेत धूप में पसरे थे और मौन मठ सजग, पर स्थिर खड़े थे। दूर एक सागर था जिसमें एक छोटी सी नाव में दो तरुण बैठे थे। एक पिएरो था। दूसरी मारिएत्ता।

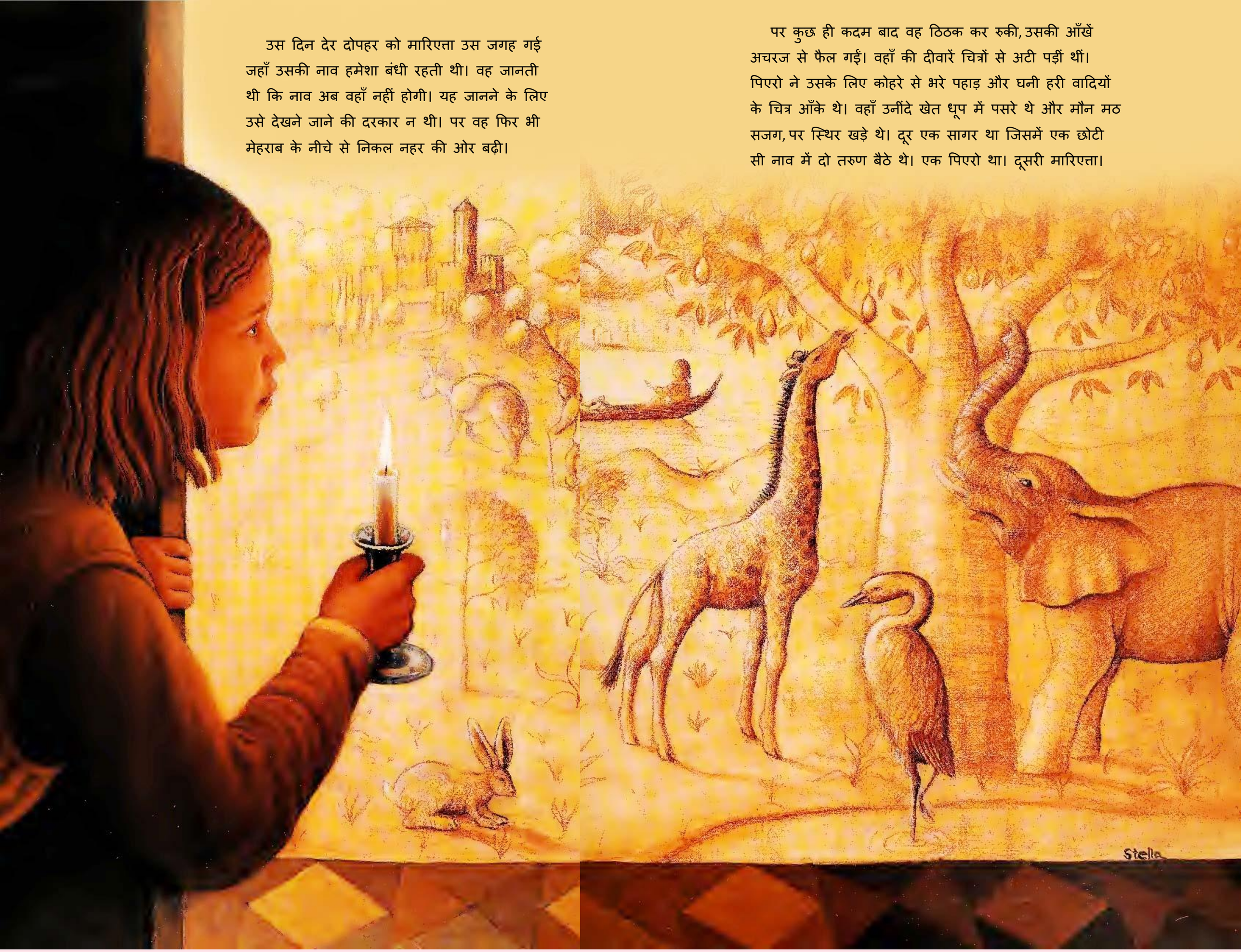

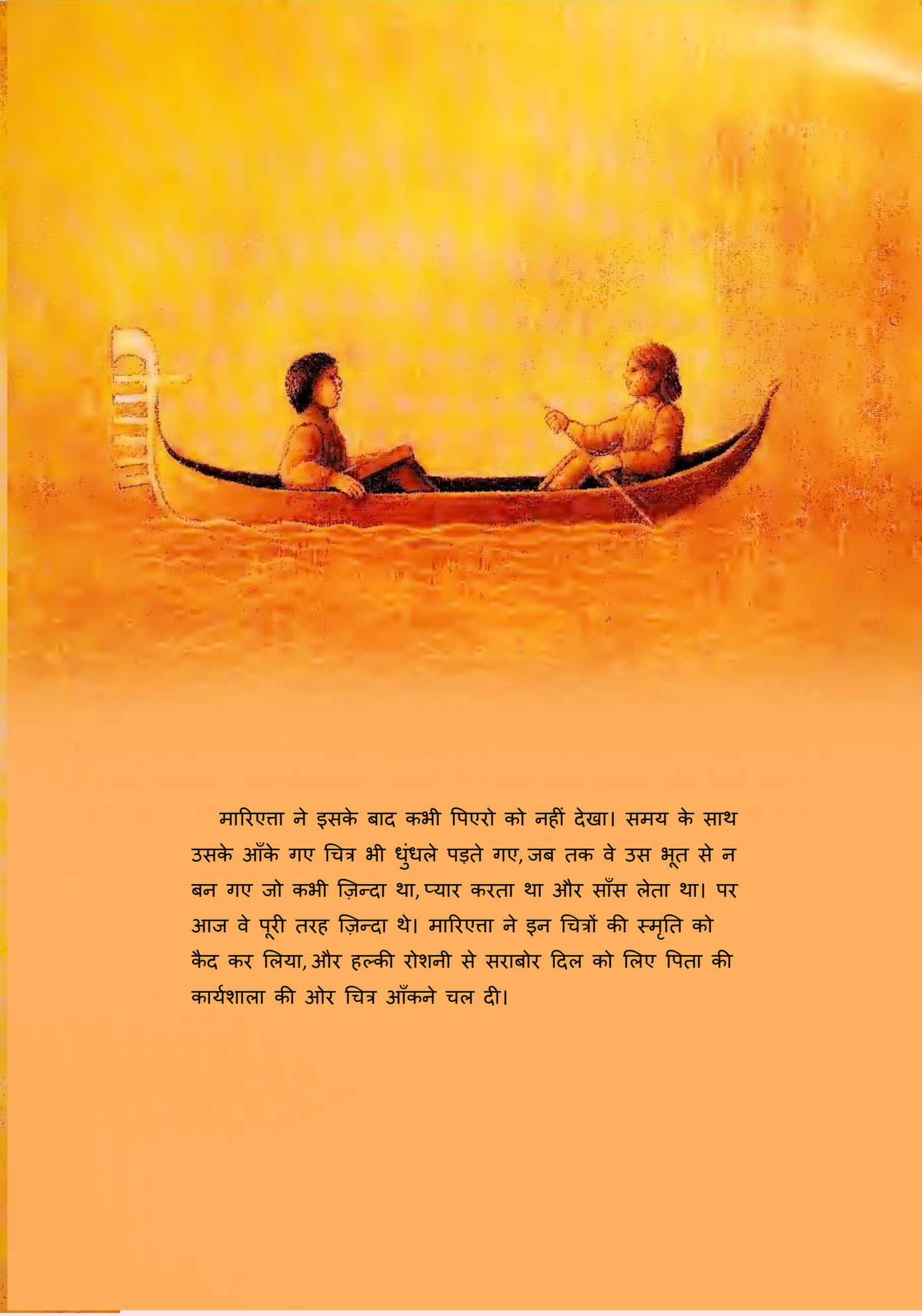

मारिएत्ता ने इसके बाद कभी पिएरो को नहीं देखा। समय के साथ उसके आँके गए चित्र भी धुंधले पड़ते गए, जब तक वे उस भूत से न बन गए जो कभी ज़िन्दा था, प्यार करता था और साँस लेता था। पर आज वे पूरी तरह ज़िन्दा थे। मारिएत्ता ने इन चित्रों की स्मृति को कैद कर लिया, और हल्की रोशनी से सराबोर दिल को लिए पिता की कार्यशाला की ओर चित्र आँकने चल दी।

लेखक की टिप्पणी

मारिएत्ता तिनतोरेत्तो वेनिस के विख्यात चित्रकार जैकोपो तिनतोरेत्तो की बेटी थी। उसका जन्म 1506 में, पुनर्जागरण के दौरान हुआ था। यह वह समय था जब वेनिस में सभी कलाओं का सम्मान किया जाता था; जागरूकता का दौर था और नए विचारों की आज़ादी थी। पर मारिएत्ता एक लड़की थी। अपने पिता से साथ काम कर पाने, उनसे सीखने के लिए तिनतोरेत्तो उसे लड़के के कपड़े पहनाते थे। इसलिए ताकि वह हर जगह पिता के साथ जा सके। आगे चल कर मारिएत्ता भी प्रतिभाशाली चित्रकार बनीं। मारिएत्ता कभी वेनिस के बाहर न जा सकीं। उनका विवाह हुआ और चौंतीस वर्ष की आयु में प्रसव के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।

एक अर्से तक यह माना जाता था कि वे अपने पिता की सहायिका भर थीं। पर 1920 में एक चित्र जिसका शीर्षक *पोर्ट्रेट ऑफ एन ओल्ड मैन विद बॉय* को उनकी रचना घोषित किया गया। चित्र की सतह पर एक छोटा 'एम' नज़र आता है जिसे मारिएत्ता का दस्तख़त माना गया।

कुछ विद्वानों का कहना है कि चित्र में जो बुज़ुर्गवार हैं वे मारिएत्ता के नाना मार्को दी विसकोवी हैं। पर यह भी संभव है कि वे काल्पनिक पिएरो के दादा हों, जो कुछ समय के लिए मारिएत्ता की ज़िन्दगी में आया और तब अलोप हो गया। पर वे जो भी रहे हों वे बुज़ुर्गवार और वह लड़का हमेशा के लिए इस चित्र में रहेंगे। यह कहानी और इसके चित्र इनके रचनाकारों के विदा होने के बाद भी दर्शकों के दिल को छूते रहेंगे। यह पुस्तक एक चित्रकार को अर्पित की गई श्रद्धांजलि है।

मैं दो चित्रकारों की दिल से आभारी हूँ - मारिएत्ता पैट्रिशिया लेज़ जिनके चित्रों ने इस कहानी को लिखने में मदद की और स्टैला ईस्ट जिनके चित्रों ने इस कहानी में प्राण फूँके।

मैक्सीन ट्राटिए ने कई सचित्र कथाओं की रचना की। वे अपने लेखन के लिए प्रशंसित भी हुईं। वे इतिहास में इसी तरह की सोने की डलियाँ तलाशना पसन्द करती हैं, जिनके गिर्द वे 'ऐसा होता तो?' किस्म की कथाएं रच सकें। नतीजतन उनके पाठक न केवल उम्दा कहानियाँ पढ़ पाते हैं, बल्की पढ़ते हुए सीखते भी हैं। उनकी कुछ अन्य सचित्र क़िताबें हैं *ड्रीमस्टोन, स्टॉर्म एट बटोचे, पावलोवास् गिफ्ट,* तथा *देयर हैव ऑल्वेज़ बीन फॉक्सेस*। कुछ बड़ी उम्र वाले पाठकों के लिए *सर्कल ऑफ सिल्वर क्रानिकल्स* ऋंखला की तीन पुस्तकें हैं जो कनाडा और अमरीका के इतिहास का परिचय देती हैं। मैक्सीन स्कूली शिक्षिका के रूप में सेवानिवृत्त हुईं। वे अपने पति को साथ ऑन्टेरिओ में रहती हैं।

स्टैला ईस्ट कनाडा की चित्रकार हैं, जिनकी शास्त्रीय शैली ने उन्हें अंतर्राष्ट्रय ख्याति दिलवाई है। इस क़िताब के चित्रों को बनाने के लिए स्टैला न केवल वेनिस में तिनत्तोरेत्तो के घर गईं, बल्की उन्होंने अपने फोटोग्राफों और चित्रों को साथ मिलाया ताकि ऊँचाई से वेनिस के सौन्दर्य को दर्शाया जा सके। उनके आँके चित्र ट्राटिए की रचना *ड्रीमस्टोन* में भी शामिल हैं। हालांकि स्टैला नेपियन, ऑन्टेरिओ में बड़ी हुईं, वे अब अपने परिवार के साथ नॉर्वे में रहती हैं।